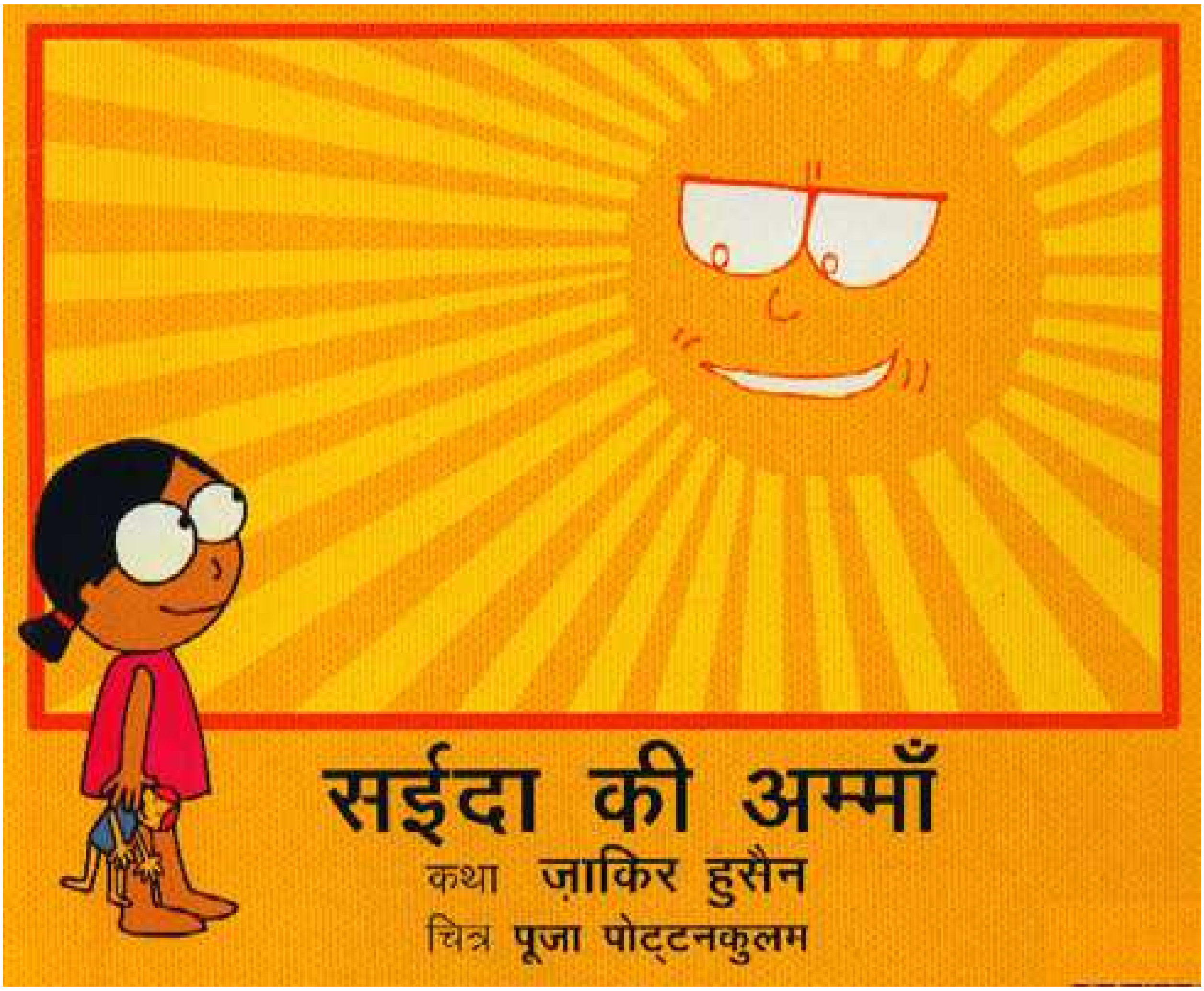

सईदा की अम्माँ

कथा **ज़ाकिर हुसैन**

चित्र **पूजा पोट्टनकुलम**

सईदा की अम्माँ बहुत दिनों से बीमार थीं। बुखार, खाँसी, कभी हाथ–पाँव में दर्द, कभी पेट में, कभी पीठ में। बहुत दिनों तक हकीमों का इलाज होता रहा। किसी न किसी चीज़ से तो फ़ायदा ज़रूर होता था। लेकिन बीमारी का सिलसिला था कि चलता ही जाता था। कमज़ोरी बहुत हो गई थी। गर्मी अच्छी ख़ासी थी लेकिन जिस हकीम का इलाज चल रहा था, वे हवा से बहुत डरते थे इसलिए सब

खिडकियाँ और दरवाज़े बन्द रखने की ताकीद कर दी थी।

पड़ोसियों ने कहा कि डाक्टर अंसारी साहब का इलाज कराओ। माना उनकी फ़ीस ज़्यादा है, नुस्खे में दवाएँ भी बहुत मँहगी लिखते हैं। मगर जान है तो जहान है।

सईदा की अम्माँ बेचारी ग़रीब औरत थी। पर अब कहा कि कुछ गहने बेचूँगी और डाक्टर साहब का ही इलाज कराऊँगी।

डाक्टर साहब कई दिन के इन्तज़ार के बाद आए। कोई आधा घंटे तक हाल सुना, देखा–भाला और नुस्खा लिखा। सईदा की ख़ाला ने पूछा, "और डाक्टर साहब खाने को?"

डाक्टर साहब ने कहा, "जो उनका जी चाहे खिलाओ। फुलका, शोरबा, दूध, अनार का अर्क, अंगूर का अर्क।" अपनी ख़ाला के पास बैठी सईदा सब सुन रही थी। "और इन्हें इस कोठरी में न कैद करें। ये ठीक नहीं है। इन्हें बड़े कमरे में रखें, खिड़कियाँ सब खुली रहें और 8 बजे से 9 बजे तक इन्हें बाहर धूप में तकिये की टेक देकर बैठाया कीजिए। ये दवा से ज़्यादा ज़रूरी है।"

अड़ोस–पड़ोस की न जाने कितनी बुढ़ियाँ हर वक़्त जमा रहती थीं। कोई कहती, "ये मुए डाक्टर क्या जानें। हवा में बैठने को कह गए हैं।" दूसरी कहती, "खाँसी का ये हाल और दरवाज़े खुले रखो, बुख़ार रोज आता है, धूप में बैठें।" सईदा की अम्माँ को यह बहस अच्छी नहीं लगती थी।

बुढ़ियाँ डाक्टर साहब और उनके फ़न के मुतअल्लिक बातें करती गईं और बराबर बिस्तर के पास पिच–पिच पीक थूकती रहीं।

आख़िर सईदा की अम्माँ से न रहा गया। उन्होंने करवट ली और बोलीं, "अब मैं चाहे मरूँ चाहे जियूँ। डाक्टर साहब ने जो कहा है वही करूँगी। बहन, अब तुम बड़े कमरे में मेरा बिस्तर ले चलो और सुबह से धूप में एक चारपाई बिछा दिया करो।"

बहन ने फ़ौरन बड़े कमरे का अंगड़–खंगड़ हटाना शुरू किया और शाम तक बिस्तर उस कमरे में बिछा दिया।

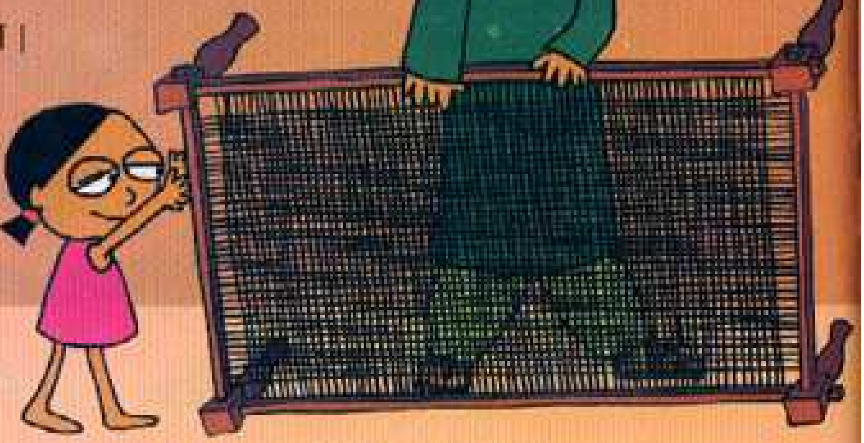

खिड़कियाँ और दरवाज़े खुले रहे। सईदा की अम्माँ को खूब नींद आई और सुबह उठीं तो तबियत हल्की–हल्की सी थी। अब 8 बजे का

इन्तज़ार शुरू हुआ लेकिन खुदा का करम, 7.30 बजे से ही सारे आसमान पर बादल छा गए और सारे दिन धूप न निकली। सईदा की माँ ने ठण्डी साँस लेकर कहा, "या अल्लाह ! अगर धूप नहीं निकलेगी तो मैं कैसे अच्छी होऊँगी।"

सईदा भी खाट की पट्टी के पास अपनी गुड़िया को लिये खड़ी ये बातें सुन रही थी। उस दिन शाम को धूप निकली तो सईदा आँगन से दौड़ी हुई आई और बरामदे से ही चिल्लाई कि, "अम्माँ–अम्माँ, देखो धूप निकली।"

सबको बड़ी हैरत हुई कि देखो, ज़रा सी बच्ची और इतना ध्यान ! मगर उन्होंने चारपाई न निकाली।

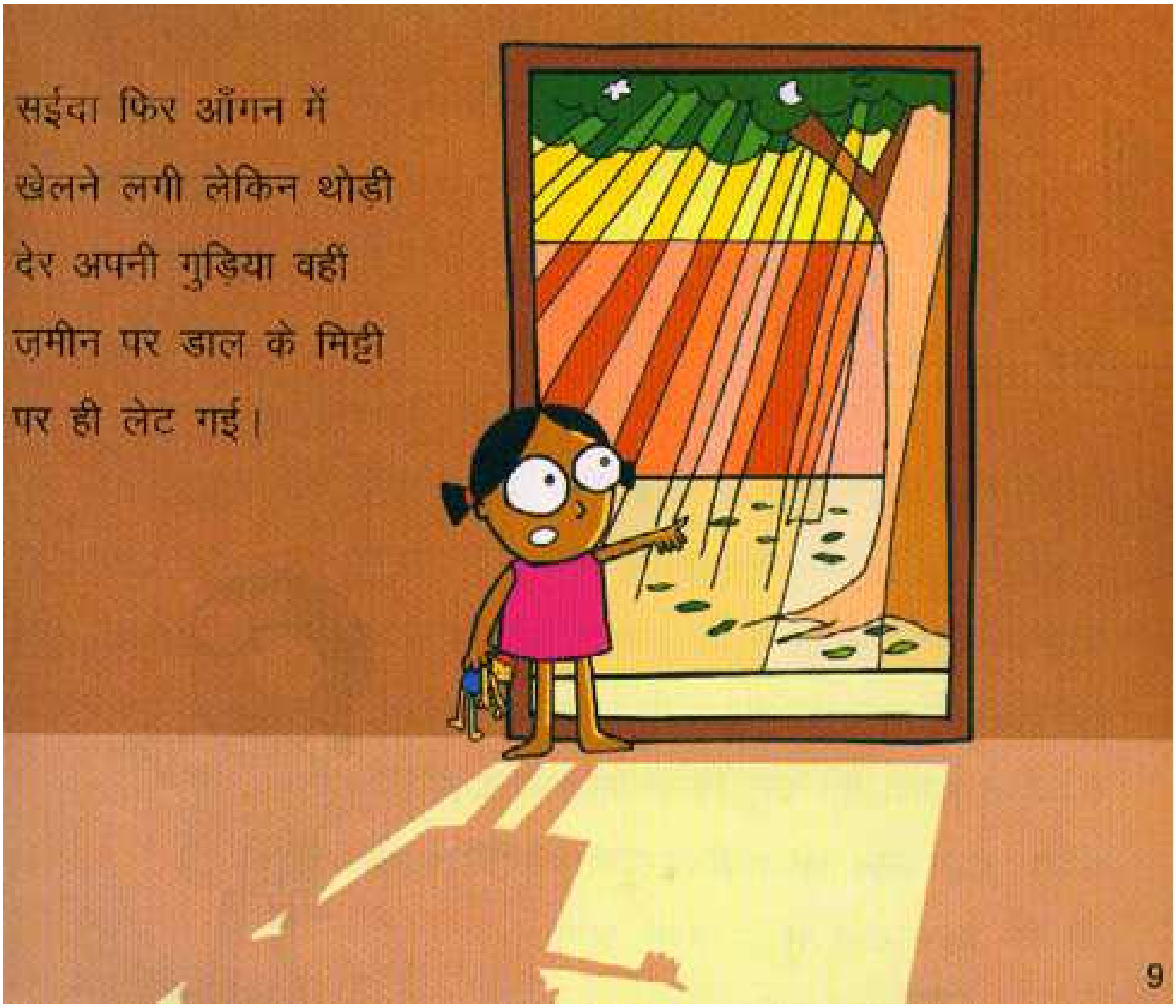

सईदा फिर आँगन में खेलने लगी लेकिन थोड़ी देर अपनी गुड़िया वहीं ज़मीन पर डाल के मिट्टी पर ही लेट गई।

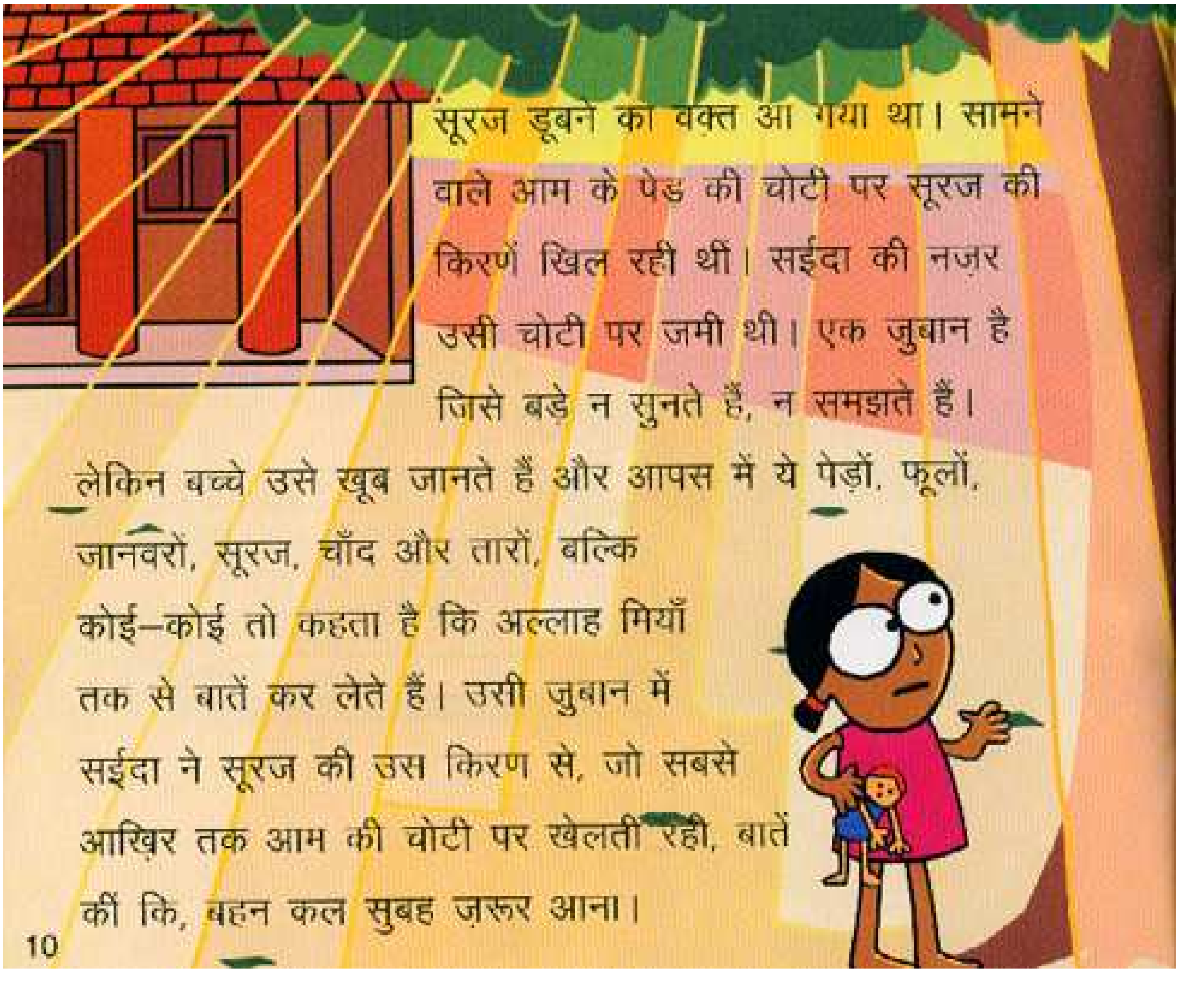

सूरज डूबने का वक्त आ गया था। सामने वाले आम के पेड़ की चोटी पर सूरज की किरणें खिल रही थीं। सईदा की नज़र उसी चोटी पर जमी थी। एक जुबान है जिसे बड़े न सुनते हैं, न समझते हैं। लेकिन बच्चे उसे खूब जानते हैं और आपस में ये पेड़ों, फूलों, जानवरों, सूरज, चाँद और तारों, बल्कि कोई–कोई तो कहता है कि अल्लाह मियाँ तक से बातें कर लेते हैं। उसी जुबान में सईदा ने सूरज की उस किरण से, जो सबसे आख़िर तक आम की चोटी पर खेलती रही, बातें कीं कि, बहन कल सुबह ज़रूर आना।

अम्मा के लिए धूप कर देना। नहीं तो अम्मा कैसे अच्छी होंगी।

उस किरण ने सईदा से वादा कर लिया, "मैं ज़रूर आऊँगी, तू उदास मत हो।"

दूसरे दिन जब सूरज की किरणों ने दुनियाँ में आने के लिए बनना–सँवरना शुरू किया तो सूरज ने कहा, "चलो आज भी छुट्टी है। दुनियाँ का रास्ता बादलों की फ़ौज ने बन्द कर रखा है।"

मगर वह किरण जिसने एक दिन पहले सईदा से बातें की थीं, ज़रा आगे को बढ़ी और बोली, "और अब मैं क्या करूँ? मैं तो कल सईदा को ज़ुबान दे चुकी हूँ कि सुबह ज़रूर आऊँगी और तुम्हारी अम्माँ के लिए धूप करूँगी। नहीं तो वह अच्छी कैसे होंगी! ये कम्बख़्त बादलों की फ़ौज! मेरा बस चले...।"

दूसरी बहनों को भी ख़्याल हुआ कि इस किरण की बात हेठी न हो। सईदा क्या कहेगी कि अब आसमान के लोग भी झूठ बोलने लगे। सब की सब सूरज से लिपट पड़ीं कि आज तो ज़रूर दुनियाँ को जाएँगी, आज तो ज़रूर!

सूरज ने कहा, "अच्छा तुम्हारी खुशी! चलो, मगर बादलों की फ़ौज में तमाम कीचड़ होती है, तुम्हारे सारे कपड़े नास हो जाएँगे।"

मगर किरणें कहाँ सुनतीं। सब ने कहा "हम कपड़े बचा लेंगी।" आखिर ये कहकर उन्होंने ज़मीन की ओर रुख किया।

ये नन्हीं किरणें बादलों की फौज
को भला क्या हटातीं मगर
उनमें गर्मी तो होती है।
एक जगह बादलों की
फ़ौज के एक टुकड़े पर
बराबर घंटे भर जा
चमकीं तो फ़ौज का ये
दस्ता मारे गरमी के घबरा उठा
और एक तरफ़ को हट गया। बस क्या था, किरणों को रास्ता मिल गया।

ये देखते–देखते दुनियाँ में पहुँच गईं। और सीधी सईदा की अम्माँ के आँगन में उतरीं।

सईदा सुबह से बादलों को देख रही थी और उदास बैठी थी। किसी से कुछ कहती भी न थी। अब जो किरणों की सवारी पहुँची तो उसका चेहरा बाग–बाग हो गया। और वो फिर चिल्लाई "अम्माँ–अम्माँ देखो! धूप निकली!" बच्ची की उस बात से अम्माँ पर बड़ा असर पड़ा और उनकी आँखों में मोहब्बत के आँसू भर आए।

सईदा की ख़ाला ने आँगन में हरसिंगार के पेड़ के पास धूप में चारपाई डाल दी। सईदा की अम्माँ घंटे भर तक धूप में बैठी रहीं। महीनों बाद छोटे से बन्द कमरे से निकल कर धूप और ताजा हवा में निकली थीं। इसलिए लगता था कि नई दुनियाँ में आ गई। चेहरा पीला था लेकिन इतना उदास न था। आँखों में नई रौशनी सी आ गई थी। सईदा भी मामूल से ज़्यादा ख़ुश थी। अम्माँ ने उसे गोद में उठा लिया और ख़ूब चूमा। हवा के झोंकों से उस वक़्त हरसिंगार के बहुत से फूल सईदा की अम्माँ की गोद में गिरे। दीवार पर चिड़िया ने ख़ुशी का गीत गाया। उसी दिन से सईदा की अम्माँ की तबियत अच्छी होने लगी। और अब वह अच्छी भली–चंगी हैं।